2/2/22 डा. गिरजा उपेत
एसोसिएट प्रोफेसर
विभाग- मनोविज्ञान (2)

PAGE NO.: 9
DATE: . / . /

स्नातक भाग -I

असामान्यता सम्बन्धी विभिन्न दृष्टिकोण या नमूने (Different viewpoint or criteria or models regarding Abnormality)

1. आत्मगत दृष्टिकोण (Subjective viewpoint) - यह दृष्टिकोण बहुत ही प्राचीन है। प्रारम्भ में लोग व्यक्तिगत विचार के आधार पर असामान्यता को आँकने की कोशिश करते थे। किसी व्यक्ति का व्यवहार जब निर्णायक के व्यवहार के अनुरूप होता था तब उस व्यक्ति को सामान्य समझा जाता था। इसके विपरीत, जिस व्यक्ति का व्यवहार निर्णायक व्यवहार के अनुरूप नहीं होता था उस व्यक्ति को असामान्य समझा जाता था और उसके व्यवहार को असामान्य व्यवहार कहा जाता है।

एक के अनुसार सामान्य और दूसरे के अनुसार असामान्य समझा लिया था। इसमें निर्णायक की आभिरुचि मनोवृत्ति (Attitude) एवं पूर्वधारणा (Prejudice) का महत्वपूर्ण हाथ रहता था। किन्तु यह दृष्टिकोण बहुत दिनों तक मान्य नहीं रह सका, क्योंकि यहाँ निर्णायक का व्यवहार ही मापदण्ड (Standard) समझा जाता था। इन सब कारणों से विद्वानों ने असामान्यता की व्याख्या में आत्मगत दृष्टिकोण को कोई महत्व नहीं दिया।

2. सामाजिक दृष्टिकोण (Social viewpoint) - कुछ विद्वानों ने असामान्यता की व्याख्या सामाजिक रीति-रिवाज (Social customs) सामाजिक नियम तथा परम्परा (Tradition) के आधार पर की है। इसे इसे सामाजिक दृष्टिकोण कहते हैं। जिस व्यक्ति

PAGE NO.:
DATE:

का व्यवहार सामाजिक रीति-रिवाज के अनुकूल होता है। उसे सामान्य कहते है और जिसका व्यवहार सामाजिक रीति-रिवाज के अनुकूल नही होता है, उसे असामान्य कहा जाता है।

पागलो का व्यवहार सामाजिक रीति-रिवाज अथवा सामाजिक नियमों के अनुकूल नही होता है, इसलिए पागलों को हम असामान्य कहते है। इसी प्रकार मानसिक दुर्बलता के कारण व्यक्ति सामाजिक नियमो को भंग करता है, इसलिए असामान्य कहते है

इस दृष्टिकोण के अनुसार सामाजिक नियम ही असामान्यता के मापदण्ड है। लेकिन प्रत्येक समाज के नियम अलग-अलग है। एक ही नियम का पालन करना एक समाज में सामान्यता का परिचायक है और दूसरे समाज में असामान्यता का। यह दृष्टिकोण बहुत अंशो में असामान्यता की समस्या हल कर लेता है फिर भी इसमें कुछ त्रुटियाँ है जिनकी उपेक्षा नही की जा सकती है।